Dr. Anshu Pandey
Assistant Professor
History department

UNIT – 5
CC- 5

LIBERALS
(गांधी : स्वराज, लोकतंत्र और राज्य की सीमाएँ)

महात्मा गांधी की राजनीतिक विचारधारा में स्वराज की अवधारणा केंद्रीय स्थान रखती है। गांधी स्वराज को केवल विदेशी शासन से मुक्ति के रूप में नहीं देखते थे। उनके अनुसार वास्तविक स्वराज का अर्थ आत्म-नियंत्रण और नैतिक अनुशासन है। यदि व्यक्ति अपने विचारों और कर्मों पर नियंत्रण नहीं रख सकता, तो राजनीतिक स्वतंत्रता भी निरर्थक हो जाती है।

गांधी लोकतंत्र के समर्थक थे, लेकिन उन्होंने लोकतंत्र की सीमाओं को भी स्पष्ट किया। उनका मानना था कि बहुमत का निर्णय हमेशा सत्य या न्यायपूर्ण नहीं होता। यदि बहुमत अनैतिक है, तो अल्पसंख्यक का विरोध भी सत्य का प्रतिनिधित्व कर सकता है। इस दृष्टि से गांधी का लोकतंत्र नैतिक लोकतंत्र था, न कि केवल संख्यात्मक व्यवस्था।

राज्य की भूमिका को लेकर गांधी अत्यंत सतर्क थे। वे मानते थे कि राज्य जितना अधिक शक्तिशाली होगा, व्यक्ति की स्वतंत्रता उतनी ही सीमित होगी। इसलिए उन्होंने राज्य के कार्यक्षेत्र को सीमित करने और समाज की नैतिक

शक्ति को बढ़ाने पर बल दिया। उनके अनुसार आदर्श समाज में कानून से अधिक नैतिकता का शासन होना चाहिए।

गांधी का यह दृष्टिकोण आधुनिक राजनीतिक चिंतन में एक वैकल्पिक मार्ग प्रस्तुत करता है, जिसमें स्वतंत्रता, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व का संतुलन स्थापित करने का प्रयास किया गया है।